शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2013

मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में शिल्पगत वैशिष्ट्य और भाषा सौष्ठव

डॉ संतोष सोलंके
विक्रम विश्वविद्यालय
उज्जैन, भारत

शोध संक्षेप

रचनाकार शब्दों का शिल्पी होता है। वह अपनी कलम से शब्दों को तराशते हुए कल्पना और अनुभूति की नींव पर उन्हें जमाकर अपनी रचना को सशक्त एवं प्रभावी बनाता है। पाठकों तक अपने कथ्य को सहजता से सम्प्रेषित करके अपनी कृति में कुछ विशिष्टता ला सकने और अपने लक्ष्य के निकट पहुँचने के प्रयास में वह नवीन से नवीनतम प्रयोगों का अन्वेषण करता है। मृदुला गर्ग जी ने अपने साहित्य लेखन से शिल्प विधान की स्थापना की है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके इसी शिल्प विधान पर प्रकाश डाला गया हैं।

प्रस्तावना

साहित्यकार के लिए भाषाई प्रयोगों का अन्वेषण शिल्प संस्कार का वह सेतु है, जहाँ लेखकीय अनुभूति और प्रेरणापरक यथार्थ का ही सम्मिलन होता है। शिल्प तो अंग्रेजी के 'टेकनिक' शब्द का हिन्दी अनुवाद है। विषयवस्तु को कला के रूप में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया ही शिल्पविधि है। शिल्प की दृष्टि से कहानी और उपन्यास अन्य कलाओं की अपेक्षा सहज बोधगम्य होती है। विचार सम्प्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम भाषा है। भाषा का संबंध तो समाज और मनुष्य दोनों से है। साहित्य की सफलता तो पूर्णतः भाषा पर ही आश्रित है। भाषा अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन है। भाषा की सृष्टि में शब्दों की अहम भूमिका होती है। वर्णों के सार्थक मेल से शब्द बनते है। उन्ही से भाषा निर्मित होती है। शब्दों की सार्थकताअपने आप में महत्वपूर्ण है। जो शब्द भाषा में प्रयुक्त होते है, वे नाम स्वभाव अथवा क्रिया के प्रतीक होते है। "डाॅ. कल्याण शर्मा के अनुसार भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है और एक ऐसी शक्ति है, जो मनुष्य के विचारों, अनुभवों और साथ में संदर्भों को व्यक्त करती है। जिसकी ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनिमय करता है। उनकी समष्टि को ही हम भाषा कह सकते है।"1

मृदुला गर्ग ने भाषा वैशिष्ट्य और भाषा सौष्ठव के कारण वह अपनी अलग पहचान बनाई हुई है।

1. लाक्षणिक और व्यंजक शैली का प्रयोग

"सामान्यतः काव्य में वाचक, लाक्षणिक और व्यंजक तीन प्रकार के शब्दों का प्रयोग होता है और इन शब्दों का अर्थ क्रमशः अभिधा, लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्ति के माध्यम से व्यक्त होता है। वाक्यों में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ मात्र अभिधा शब्दशक्ति से व्यक्त नहीं होता फलतः लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्ति का आश्रय लेना पड़ता है। लक्षणा उसे कहा जाता है जो मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होने पर प्रयोजन के ही आधार

पर मुख्य अर्थ से सम्बंधित अन्य लक्ष्यार्थ को ग्रहण करता हैं। शैली का अर्थ है स्वभाव, आदत, आचरण। अतएव शैली का अर्थ है लिखने का ढंग, परिपाटी और आचरण शैली एक अभिव्यक्ति का प्रकार है अर्थात व्यक्त करने की एक कला शैली है।"2 व्यंजना भी एक महत्वपूर्ण शैली है। इसे कई विद्वानों ने व्यंजना व्यापार कहा है। व्यंजना के द्वारा ही व्यंग्यार्थ का आश्रय लिया जाता है। यही शैली लाक्षणिक शैली के अर्थ को अभिष्ठ अर्थ को व्यक्त करती है।

1. उपन्यासों में

श्रीमती मृदुला गर्ग के उपन्यास केवल लाक्षणिक और व्यंजक शैली में ही रचित नहीं है बल्कि विविध शैलियों के प्रयोग से उनके उपन्यास सजे हुए हैं। यथाप्रसंग श्रीमती मृदुला गर्ग के उपन्यास और कहानियों के शिल्पगत व्यंजना व्यंजक शैली उन्होंने अलग-अलग शैलियों को अपनाकर अपनी बात कही है। उन्होंने अनेक प्रचलित शैलियों का प्रयोग किया है।

1. उसके हिस्से की धूप

लेखिका के इस बहुचर्चित उपन्यास में लाक्षणिक और व्यंजक शैली का प्रयोग कुछ इस तरह से किया है। "बल्कि एक के बाद एक पड़ रहे उनके आघात मे भी लयानुगति थी, जो की कलकल से मिलकर मृदुल तराबे के रूप ले रही थी।"3

उसके हिस्से की धूप उपन्यास तीन अलग-अलग खण्डों में विभाजित है। 1. जितेन, 2. मधुकर और 3. मनीषा। इन तीनों 'पात्रों' का पारस्परिक संबंध है। हर एक खण्ड के पात्र की कहानी आत्मकथात्मक शैली में पात्र स्वयं नहीं कहते बल्कि तृतीय पुरूष शैली के रूप में नायिका मनीषा द्वारा वर्णनात्मक शैली में जितेन और मधुकर की कथा प्रस्तुत की गई है। उपन्यास में पूर्वदीप्ति शैली का भी प्रयोग हुआ है, जैसे चार वर्ष बाद पूर्व पति जितेन से मिलती है। 'उसके हिस्से की धूप' संवादात्मक और नाटकीय शैली की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण सिद्ध होता है।

मनीष और जितेन के मध्य हुआ वार्तालाप बिल्कुल नाटकीय अंदाज में है, जैसे रंगमंच पर दो पात्र बातें कर रहे है। "आजकल हो कहाँ ? उसके चुप हो जाने पर जितेन ने पूछा दिल्ली। 'जाता रहता हूँ। कभी आऊं तो मिलोगी। 'हाँ' शायद कोशिश करूंगी। 'फोन है? हाँ', 45876270"। 4

मृदुला गर्ग जी का दूसरा उपन्यास 'वंशज' में भी, संवादात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली और लाक्षणिक व्यंजक शैली का मिला जुला रूप है। लाक्षणिक और व्यंजक शैली के प्रयोग में अकेलेपन से भी भयंकर एकाकीपन का खौफ उपन्यास में स्थान-स्थान पर संवादात्मक दिखती है।

3. चित्तकोबरा

'चित्तकोबरा' उपन्यास में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। लाक्षणिक और व्यंजक शैली के रूप में "जब चांद के चारों तरफ नीला घेरा होता है, तो बस नीला घेरा होता है और कुछ नहीं, मैं घेरे के अंदर होती हूँ, मेरे अंदर एक आत्मा जन्म लेती है।"5 इसमें मनुष्य

की चेतना के कई चित्र उभरते हैं, उपन्यास में आत्मकथात्मक शैली के अंतर्गत देखिए "नहीं मैं अभी उठुँगी, उसके बाद धीरे झुककर लिफाफा खोलूँगी, पहले नजरों से ही चुमूँगी, फिर हाथ से सहलाऊँगी।"6

इस उपन्यास में विश्लेषणात्मक शैली का भी प्रयोग हुआ है। इस शैली में कथानक की स्थूलता नहीं होती है।

अनित्य में 'दुविधा' और 'प्रतिबोध' इन दो खण्डों में कथानक को प्रस्तुत किया गया है, जो नायक अविचित की मानसिकता से सम्बन्धित। अनित्य का कथानक प्रमुखतः लाक्षणिक, व्यंजक शैली, तृतीय पुरूष शैली, चेतना प्रवाह शैली का प्रयोग लेखिका ने किया है। लाक्षणिक व्यंजक शैली में साफ नजर आती है, सांप की तरह रेंगने की नाकाम कोशिश में फड़कती नसें।"7

इसमें नायक केन्द्रबिन्दु मे है। उसे तृतीय पुरूष शैली में प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में कथानक में अविजित के रचाव में फ्लैश बेक शैली का प्रयोग भी मिलता है। "अगर तभी मैं काजल से शादी कर लेता कितने अभिशापों से बचा रहता..... श्यामा.....अकर्मण्यता..... संगीता..... यह अपराध भावना.....। बचा रहता? वाकई मेरे शरीर का अदम्य उताप मुझे इस मरूस्थल पर न ला पटकता।"8

5. मैं और मैं

'मैं और मैं' लेखिका ने अन्य पुरूष शैली मे तृतीय पुरूष शैली का प्रयोग माधवी, राकेश, कौशल इन तीनों पात्रों को लेखिका ने वर्णनात्मकता के सहारे प्रस्तुत किया है इस उपन्यास मे लाक्षणिक और व्यंजक शैली में "फाहश गालियों का गंदा नाला, उसकी जबान से बह निकला काश तिलचट्टे की जगह पैरों के नीचे कोई खुबसूरत औरत होती। ठोकर मार-मारकर बेहोश कर देता।"9

उपन्यास के कथानक के अंतर्गत संवादात्मकता नाटकीयता आदि के कारण उपन्यास विस्तृत और पठनीय है।

6. कठगुलाब

शुद्ध सरल, और सशक्त भाषा में लिखा गया लेखिका मृदुला गर्ग जी का 'कठगुलाब' एक शैली की दृष्टि से महत्वपूर्ण उपन्यास है। आत्मकथात्मक शैली में कथावाचक स्मिता अपनी जीवन कहानी अपनी जुबानी इस रूप में कहती है- "देखा आपने मेरी जिन्दगी का आधार था, एक जोड़ी चश्मा क्या आधुनिक सौन्दर्यबोधहै। आज मैं अपने जीवन के इस विद्रूप पर हंस सकती हूँ बहुत मेहनत करके हंसना सीखा है मैंने।"10

7. मिलजुल मन

'मिलजुल मन' लेखिका का नवीनतम उपन्यास है इस उपन्यास में लेखिका ने आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है, लाक्षणिक और व्यंजक शैली मै। "सीता ने सरयू नदी में हाथ डाल मंजुली में पानी भरा तो चीख पड़ी, रक्त-रक्त और डरकर वापस उडेल दिया। राम हँस दिए, रक्त नहीं सीते, हाथो की लालिमा है। ऐसे सुंदर थे सीता के हाथ।"11

2. कहानियों में

शैली के भी विविध प्रयोग लेखिका की कहानियों में प्राप्त होते है जैसे- लक्षणा, व्यंजना शैली, वर्णनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, वार्तालाप शैली इत्यादि।

1. कितनी कैदें

शैली के माध्यम से विचारों को व्यक्त करने के लिए कई प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया जाता है तो उसमें लाक्षणिक और व्यंजक शैलियों का प्रयोग ही अधिक उपयुक्त होगा, लेखिका ने अपनी कहानी कितनी कैंदे में भी पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग नायिका मीना के माध्यम से किया। लाक्षणिक व्यंजना शैली में 'एक और विवाह में प्रयोग हुआ है। "दुबली, पतली देह, गेहुआ रंग, साधारण नाक नक्श, बड़ी-बड़ी रसीली आंखें। लगता है आँखों से व्यंग्य का आवरण हटाकर किसी पुरूष पर टिका दे तो चारों ओर का वातावरण सुरभि बन कर लुप्त हो जाये।"12

'हरी बिंदी', 'लौटना और लौटना' मे और 'अगर यों होता' 'टुकड़ा टुकड़ा आदमी' इस कहानी संग्रह की कहानियाँ वर्णनात्मक संवादात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

3. ग्लेशियर से- व्यंजना का कार्य ही वही है, जो अभिष्ट अर्थ को व्यक्त करती है, इसलिए शैली में रचनाकार अपने विशिष्ट भाव, विचार, शब्दों, रूपकों, बिंब, प्रतिकों के माध्यम से व्यक्त करता है। "झुलती कुर्सी में कतरा कतरा रोशनी उसके बालों पर झर रही है, धूप में निखर आए भूरे बाल, समुद्रतट रेत की तरह।"13

हैली शेफाली। शेफाली है न। अरे यह मुझे पहचान गया। हाँ, मुझे पहचाना।

4. उर्फ सैम- उर्फ सैम की 'विनाशदूत' कहानी में वार्तालाप शैली का प्रयोग हुआ है। 'उधार की हवा' और 'जिजीविषा' मे आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। लक्षणा और व्यंजना शैली के अंतर्गत जिजीविषा में नायक कहता है "मुझे इसके सूप की नहीं, इस खून की जरूरत है जो तुम्हारे गालो से टपका पड़ रहा है, मन हुआ उसके गालों को नोच लूँ और उसमें रिसते खून को पी जाऊं।"14

5. शहर के नाम- शहर के नाम अधिकतर कहानियों में लाक्षणिक और व्यंजना शैली के साथ-साथ आंचलिक शैली का भी प्रयोग मिलता है, इस आंचलिक शैली में 'तीन किलो की छोरी' कहानी का नाम लिया जाता है। 'शहर के नाम' में पत्र शैली का प्रयोग किया है। इसी कहानी में संवादात्मक शैली का भी प्रयोग मिलता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मृदुला गर्ग जी ने अपने साहित्य सर्जन के लिए प्रचलित शैलियों के साथ-साथ नवीन प्रयोग किये हैं। उनकी शैली पाठक को अंत तक बांधे रखती है। अनेक जगह वे सूत्र संकेतों में अपनी बात कह जाती हैं, जिस पर पाठक देर तक विचार करता रह जाता है।

सन्दर्भ

1. डॉ. कल्याण शर्मा, भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन, पृ.
2 डॉ. जगतसिंह बिष्ट- काव्यशास्त्र के सिद्धांत पृ.क्र.

110

3 मृदुला गर्ग- उसके हिस्से की धूप क्र. 20

4. मृदुला गर्ग- उसके हिस्से की धूप पृ. क्र. 32

5. मृदुला गर्ग- चितकोबरा धूप पृ. क्र. 04

6. मृदुला गर्ग- उसके हिस्से की धूप पृ. क्र. 134

7. मृदुला गर्ग- अनित्य पृ. क्र. 12

8. मृदुला गर्ग- अनित्य पृ. क्र. 60

9. मृदुला गर्ग- मैं और मैं पृ. क्र. 20

10. मृदुला गर्ग- कठगुलाब पृ. क्र. 18

11. मृदुला गर्ग- मिलजुलमन पृ. क्र. 16

12. मृदुला गर्ग- एक और विवाह (कितनी कैंदे) पृ. क्र.

29

13. मृदुला गर्ग- झुलती कुर्सी (ग्लेसियर से) पृ. क्र.

305

14. मृदुला गर्ग- जिजीविषा (उर्फ सैम) पृ. क्र. 462